(RNI No. DELHIN/2010/31333)

कृष्णा-महेश गायत्री संस्थान की पत्रिका

गायत्री माँ

वर्ष : 7 | अंक : 11 | ज्येष्ठ, विक्रमी संवत् 2071 जून, 2014

आर्य माँ कृष्णा रहेजा जी

स्वर्गीय श्री महेश्वरनाथ रहेजा

कृष्णा-महेश गायत्री संस्थान की पत्रिका

गायत्री माँ

मूल्य : 16 रुपये | वर्ष : 7 | अंक: 11 | ज्येष्ठ, विक्रमी संवत् 2071 जून, 2014

कृष्णा-महेश गायत्री संस्थान (रजि.)

संस्थापक
श्रीमती स्व. माता कृष्णा जी रहेजा
व्यवस्थापक
समस्त रहेजा परिवार
कार्यालय
डब्ल्यू 22 ए-2, वेस्टर्न एवेन्यू,
सैनिक फार्म, नई दिल्ली-110062
फोन
9958692615, 9811398994
प्रेरणा स्त्रोत
परिवार प्रमुख श्री महेश्वरनाथ रहेजा
अतिथि संपादक
प्राचार्य महावीर शास्त्री
मुद्रक
मयंक प्रिन्टर्स
2199/64, नाईवाला, करोल बाग,
नई दिल्ली-110005
दूरभाष : 9810580474

विषय-सूची

सम्पादकीय	– प्राचार्य महावीर शास्त्री	२
वैदिक विनय	– आचार्य अभयदेव	३
स्वर्गीया माता कृष्णा रहेजा जी का प्रिय भजन	–	४
भर्तृहरि सुभाषित	– प्राचार्य महावीर शास्त्री	५
दयानन्द शास्त्रार्थ संग्रह	– रघुनन्दन सिंह 'निर्मल'	७
रहेजा डवलपर्स को ग्रीनटेक और सीएसआर एवार्ड	–	६
संकल्प पर्व पर कुछ सुझाव	– पं. राम कृष्ण शर्मा	१०
कर्मों का फल	– श्री हरिशचन्द्र वर्मा	१२
संघर्ष	– डॉ. एस.एम.रहेजा	१५
Some Golden Tips...	– Dr. Ajay Mehta	१७
मानव जीवन का उद्देश्य	– डॉ. महेश विद्यालंकार	१६
ब्रह्मचारी कृष्ण से स्वामी दीक्षानन्द तक की जीवन यात्रा	– माता कृष्णा रहेजा	२२
सुभाषितामृतकरण	– श्रीमती निर्मल रहेजा	२५
आईपीएल मैच	– शुभांगी	२६
प्रतिभा समन्विता छात्रा	– प्राचार्य महावीर शास्त्री	२७
आचार्य कृष्ण	– प्राचार्य महावीर शास्त्री	२७
केस स्टडी	– सीमा देवी	२८
मेरी पहली रेल यात्रा	– नवीन	२६

गायत्री माँ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सम्पादकीय

प्राचार्य महावीर शास्त्री

विश्व में चहुँ ओर छल–कपट, लूटमार का दौर चल रहा है। मन्त्री–सन्तरी सभी जन इस लूट–खसोट में पीछे नहीं है। सच्ची देशभक्ति नहीं है। चोर–चोर मौसेरे भाई वाली बात सर्वत्र दृष्टिगोचर है। सच्चे भक्त अब क्यों शहीद होंगे जबकि भारत के मणिशंकर अय्यर जैसे केन्द्रीय मन्त्री एक बार अण्डमान–निकोबार गए और वहाँ जेल की कालकोठरी, जिस पर वीर सावरकर का नाम लिखा था वह भी वहाँ से हटवा दिया और इस महान देशभक्त, लेखक, चिन्तक, सर्वोच्च स्वतन्त्रता सेनानी जो तेल के कोल्हू में बैल की तरह जुतकर अंग्रेजों की बुद्धि का दिवाला निकाल रहे थे उनके द्वारा कुछ उकेरे गए शब्दों को भी मिटवा दिया, ऐसे थे ये केन्द्रीय मन्त्री।

विश्व में न्यायपालिका कभी भी एक अपराध के लिये दो–दो बार आजन्म की कैद की सजा नहीं सुनाती, यहीं अंग्रेजों का दिवालियापन प्रतीत होता है। किन्तु हमारे कुछ चाटुकार नेता अपने को आदर्श समझते हुए देश के शहीदों व देशभक्तों को स्मरण तक नहीं करना चाहते तो फिर अब शहीद कौन होगा।

हमारी भारतीय सेना शत्रु को नाकों चने चबाते हुए अपने प्राणों की आहुति देती है। उस पर भी एक मन्त्री ने बहुत मर्मान्तक शब्द अपने मुख से कहे कि सैनिक तो भर्ती ही मरने के लिए होते हैं। अतः आज हमारे देश की सीमाओं पर शत्रुओं की गिद्धदृष्टि लगी है। अतः सच्चे भारतीय बनकर नेतृत्व करें तथा सदैव देशभक्तों और शहीदों को नमन करें।

हम सदैव राजगुरू, सुखदेव, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, अशफाक, सुभाष चन्द्र बोस व रासबिहारी बोस के क्रान्तिकारी संघर्ष को पुनः स्मरण करें।

हम भारतीयों का परम कर्त्तव्य है कि हम सभी आदर्श व्यक्तित्व व चरित्रवान बने और भारतीय भाषाओं को बोलकर गर्व अनुभव करें। अंग्रेज लार्ड मैकाले, जो देश को दे गया उसको भूले तथा संस्कृत भाषा जो सभी भारतीय भाषाओं की जननी है, उसका देश में प्रचार करें, पढ़ें और पढ़ावें तभी देशोद्धार होगा।

वैदिक विनय

—आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

अरण्योर्निहितो जातवेदा गर्भ इव सुधितो गर्भिणीषु।
दिवे दिव ईड्यो जागृवदिभ र्हविष्मद्भि र्मनुष्येभिरग्निः।।

-ऋक्० ३।२६।२: साम० पू० १।२।८।७

ऋषिः **विश्वामित्रः।** देवता **अग्निः।** छन्दः **त्रिष्टुप।**

विनय : तुम कहते हो कि आत्मा दिखाई नहीं देता। पर यदि तुम इसे देखना चाहते हो, तो तुम इस आत्माग्नि को प्रज्वलित क्यों नहीं कर लेते ? अरणि में या दियासलाई में विद्यमान भौतिक अग्नि भी तो तब तक दिखलाई नहीं देता जब तक कि मन्थन (रगड़ने) द्वारा उसे प्रज्वलित नहीं कद दिया जाता। तुम जरा स्वात्म—रूपी दियासलाई या अरणि से प्रणव (ईश्वर नाम) रूपी (दियासलाई की) डिब्बी या उत्तरारणि पर ध्यानरूपी मन्थन करके देखो, तो तुम देखोगे कि तुम्हारा आत्माग्नि चमक उठेगा, जातवेदा जाग उठेगा। अरे ! योगरूपी अरणि और स्वाध्यायरूपी उत्तरारणि के सम्बन्ध से तो अन्तःकरण में परमात्मा तक प्रकाशित हो जाता है। यह ठीक है कि प्रारम्भ में यह आत्मज्योति एक चिंगारी के रूप में ही प्रकट होती है। अतएव इस आत्मज्योति की इस समय इतनी अच्छी तरह रक्षा करनी चाहिये, जैसे कि गर्भिणी स्त्री अपने गर्भ की रक्षा करती है। पर क्या हम अपने इस ज्ञानगर्भ की कुछ रक्षा करते हैं ? नहीं, यह सब हम न जाते हुए बड़े भारी गर्भपात के पापभागी हो रहे हैं। जैसे माता—पिता रूपी अरणियों से प्रकट हुई सन्तान रूपी अग्नि प्रारम्भ में गर्भावस्था में होती है, वैसे ही हम सब मनुष्य—शरीर पाने वालों के अन्दर जन्म से आत्मज्योति गर्भित रहती है, जो कि हममें जीव के मनुष्य—योनि—सम्बन्ध से उत्पन्न हुई है। पर हम लोग इस गर्भित 'सुधित' ज्योति को पालित—पोषित कर बढ़ाने की जगह भोगादि में पड़कर इसे दबा देते हैं, इस सुरक्षित गर्भ को विनष्ट कर देते हैं। ओह ! हम कितना भारी भ्रूणहत्या का पाप करते हैं ! पुण्यात्मा हैं वे पुरुष जो इस गर्भित आत्मज्योति को बढ़ाकर इस द्वारा अपने—आपको जगाते हैं, ज्ञानोपार्जनरूपी समिधाधानों से इस शिशु—अग्नि को प्रज्वलित करते हैं और 'जागृवत्' होते हैं तथा जो घृताहुतिरूपी आत्मबलिदानों को दे—देकर इस अग्नि को प्रचण्ड भी कर लेते हैं, 'हविष्मत्' होते हैं। संसार के महात्माओं को देखों, इन्होंने इसी प्रकार अपने में जातवेदा की चिंगारी को इतना बढ़ाया है कि वे आज सब—कुछ भस्म कर सकनेवाले महानल हो गए हैं, महाशक्ति, महात्मा हो गये हैं। ये देखो ! जागृवान्, हविष्मान् मनुष्य अपनी इस प्रज्वलित आत्माग्नि का प्रतिदिन भजन—स्ववन कर रहे हैं, इसे और—और बढ़ा रहे हैं। इनके अन्दर ये आत्मदेव निरन्तर ज्ञानों और बलिदानों द्वारा पूजित और पोषित हो रहे हैं, उठो मनुष्यों तुम भी अपनी आत्माग्नि को नित्य अधिक से अधिक प्रदीप्त करते जाओ।

शब्दार्थ - जातवेदाः ज्ञान व ऐश्वर्यवाला अग्नि **अरण्योः** अरणियों में **निहितः** छिपा हुआ होता है और यह वहाँ **गर्भिणीषु गर्भ इव** गर्भिणियों में गर्भ की तरह **सुधितः** अच्छी प्रकार धारित, सुरक्षित होता है। **अग्निः** यह अग्निदेव **जागृवद्भि** जागनेवाले, ज्ञानयुक्त **हविष्मद्भिः** हविवाले, आत्मत्यागी **मनुष्येभिः** मनुष्यों द्वारा तो **दिवे दिवे** प्रतिदिन ही **ईड्यः** पूजित व प्रार्थित होता है।

स्वर्गीया माता कृष्णा रहेजा जी का प्रिय भजन

आओ बहिनों यज्ञ करें, आओ भाइयों यज्ञ करें।
आओ बहिनों वेद पढ़े, आओ भाइयों वेद पढ़े।

प्रभु ने यह संसार रचाया, जीवन का सब सार बताया।
उन वेदों को पढ़ कर सारे, उस पे हम अमल करें।।
आओ बहिनों वेद पढ़े, आओ भाइयों वेद पढ़े।

ऋषि दयानन्द ने फिर आकर, वेदों की वाणी को गुँजाकर।
हम सबको जीना सिखलाकर, आओ वह संदेश पढ़े।।
आओ बहिनों वेद पढ़े, आओ भाइयों वेद पढ़े।

फिर प्रभु आश्रित जी थे आये, घर–घर अन्दर यज्ञ कराये।
घर–घर वेद संदेश पहुंचाए, आओ उस पर ध्यान धरे।।
आओ बहिनों वेद पढ़े, आओ भाइयों वेद पढ़े।

वेदों का पढ़ना–पढ़ाना, वेदों का सुनना–सुनाना।
जीवन को है कंचन बनाना, अपना भी है वचन निभाना।।
आओ बहिनों वेद पढ़े, आओ भाइयों वेद पढ़े।

सच्ची है यह प्रभु की वाणी, ऋषि–मुनियों ने है मानी।
बड़ी विचित्र है इसकी कहानी, उसी का ही गुनगान करें।
आओ बहिनों वेद पढ़े, आओ भाइयों वेद पढ़े।

कृष्णा महेश गायत्री संस्थान (पंजीकृत)

कृष्णा महेश गायत्री संस्थान को दिया गया दान आयकर अधिनियम १९६१ की धारा ८० जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है। कृष्णा महेश गायत्री संस्थान द्वारा निर्माणाधीन भव्य यज्ञशाला, निःशुल्क विद्यार्थी शिक्षा व आयुर्वेदिक चिकित्सालय हेतु सहयोग राशि प्रदान करें। संस्थान हेतु सहयोग राशि नकद/चैक/ड्राफ्ट द्वारा कृष्णा महेश गायत्री संस्थान, डब्ल्यू २२ए–२, वेस्टर्न एवेन्यू, सैनिक फार्म, नई दिल्ली–११००६२ के नाम भेजी जा सकती है।

भर्तृहरि सुभाषित (वैराग्यशतक)

प्राचार्य महावीर शास्त्री

भोगे रोगभयं कुले च्युति भयम्, वित्ते नृपालादयम्।
माने दैन्यं भयं, बले रिपुभयं रूपे जरायाः भयम्।।
शास्त्रे वाद भयं गुणे खल भयं काये कृतान्ताभ्दयम्।
सर्व वस्तु भयान्वितं भुवि नृणां वैराग्यमेवाभयम्।। **वैराग्यशतकम्- ३१**

सरलार्थ – सुखों के भोगने से शरीर में रोग का भय रहता है। श्रेष्ठ कुल में कलंक लगने का भय रहता है। धन इकट्ठा करने पर राजा की ओर से खटका (भय) लगा रहता है। बलवान होने पर बैरी (शत्रु) का भय रहता है। सम्मान प्राप्त महत्त्वशाली को अपमान का भय बना रहता है। सौन्दर्य समन्वित शरीर की सुन्दरता पर बुढ़ापे का भय बना रहता है। विद्वता प्राप्त विद्वान को शास्त्रार्थ में हारने का भय रहता है। गुणों से गुणी विनयी को दुष्ट लोगों द्वारा खिल्ली उड़ाने का भय रहता है। शरीर को मृत्यु का भय रहता है। अतः संसार में मानव के लिये सभी वस्तुऐं भयों से भरी पड़ी हैं। केवल वैराग्य ही एक ऐसी वस्तु है जिसमें भय नहीं है। अतः संसार में निर्भय रहना हो तो विरक्त बनो।

वयमहि परितुष्टा वल्कलैस्त्वं दुकूलैः।
सम इव तोषो निर्विशोशो विशेषः।।
स तुभवतु दरिद्रो यस्य तृष्णाः विशालाः।
मनसि च परितुष्टे कोअर्थवान् को दरिद्रः।। **वैराग्यशतकम् - ५३**

सरलार्थ – सुन्दर बहुमूल्य वस्त्र पहनकर रसिकजन जितना हर्षान्वित है, उतना ही विरक्तजन वृक्षों की छाल (वलकल) को धारण कर प्रसन्न होता है। अतः दोनों ही समान रूप से हर्षान्वित हैं कोई विशेष अन्तर नहीं है। किन्तु जिसकी तृष्णा विशाल है और भी अधिक इच्छा है किन्तु जो जन मन में सन्तुष्ट रहता है उसके लिये सम्पत्ति वाला और दरिद्र दोनों ही समान है। अतः जीवन में सन्तुष्ट रहना चाहिए।

गात्रं संकुचितम् गतिर्विगलिता भ्रष्टा च दन्तावलि
दृष्टि र्नश्यति बर्धते बधिरता वक्रात् च लालायते।
वाक्यं नाद्रियते च बान्धवजनो भार्याशुश्रयते
हा कष्टं पुरूषस्य जीर्ण वयसः पुत्रोऽप्यभिन्नायते।। **वैराग्यशतकम् - ७३**

सरलार्थ – शरीर झुर्रियाँ पड़ने से संकुचित हो जाता है। पग डगमगाते है, दाँत भी मुख से गिर गये है। दृष्टि धीमी पड़ गई है। बधिरता बढ़ जाती है। मुख लार टपकती है। भाई बन्धु बात नहीं सुनते हैं। स्त्री भी सेवा नहीं करती है सन्तान भी शत्रु बन जाती है। इस प्रकार वृद्धावस्था में मनुष्य की दुर्गति होती है।

माने म्लायिनी खण्डिते वसुनिव्यर्थे प्रयातेऽथिति

क्षीणे बन्धुजने गते परिजने नष्टे शनै यौवने।
युक्तं केवलमेतदेव सुधियां यज्जहनु कत्यापयः
पूत ग्राव गिरीन्द्र कुन्दर तटी कुञ्जे किवास क्वचित्।। **वैराग्यशतकम् - ७८**

सरलार्थ – जब मनुष्य का मान सम्मान न हो, धन दौलत तितर बितर हो जावे, याचक लोग द्वार से खाली हाथ लौटने लगें, बन्धु मित्र छूट जायें, नौकर चाकर छोड़ चलें। जवानी भी जाती रहे। ऐसी दशा हो जाये तब बुद्धिजनों के लिये यही उचित है कि हिमालय पर्वत में गंगा जी के तट पर किसी गुफा में एकान्तवास करे।

यदेतत्स्वच्छन्दं विहरणम कार्पण्यमशनम्
सहाय्यै संवासः श्रुतमुपशमैक व्रतफलम्।
मनो मन्दस्पदं बहिरपिचिरस्यापि विमृशन
न जाने कस्यैषा परिणतिरुदारस्य तपसः।। **वैराग्यशतकम् - ८२**

सरलार्थ – मनुष्य का स्वच्छन्द आहार, व्यवहार यह चित्त की शान्ति तथा मन का अन्तर्मुखी हो जाना, ऐसी अपूर्व स्थिति मनुष्य को न जाने किस पुण्य के प्रताप से प्राप्त हो जाती है इसका रहस्य ही बना रहता है।

गंगातीरे हिमगिरि शिला बद्ध पद्मासनस्य
ब्रह्नध्यानाभ्यसन विधिना योग निद्रा गतस्य।
किं तै भव्यिं मम सुदिवसै र्यत्र ते निर्विशंका
कण्डूयन्ते जरठ हरिणा स्वांगमं गे मदीये।। **वैराग्यशतकम् - ६८**

सरलार्थ – मनुष्य सोच रहा है कि क्या वह शुभ दिन आवेगा जब मैं हिमालय पर्वत पर गंगा जी के तट पर किसी चट्टान पर पद्मासन लगाकर योग–समाधि को प्राप्त हो जाऊँगा। वह समाधि इतनी गाढ़ी होगी कि जंगली हिरन मुझको निर्जीव मानकर अपनी देह को मेरी देह से रगड़कर खुजलाया करेंगे।

यावत्स्वथमिदं शरीरमरुजं यावज्जरा दूरतः
यावचेन्द्रिय शक्तिप्रति हताः यावच्क्षयो ना युषः।
आत्मा श्रेयसि ता वदेव विदुष कार्य प्रयत्नो महान्
संदीप्ते भवन तु कूप खननम् प्रत्युद्यमः कीदृशः।। **वैराग्यशतकम् - ७५**

सरलार्थ – बुद्धिमान मनुष्य को चाहिए कि जब तक शरीर स्वस्थ है। शरीर रुग्ण नहीं है। बुढ़ापा आने में देरी है और जब तक इन्द्रियाँ सशक्त है शिथिल नहीं है। आयु भी क्षीण नहीं है। आत्मकल्याण का इच्छुक मानव मतिमान्–महान् कार्यों को पूर्ण करे अन्यथा जब घर आग लगेगी तो कूपखनन का परिश्रम किस काम का ? अर्थात् शुभेच्छु मनुष्य श्रेष्ठ और जीवनोपयोगी कार्यों को कर डाले। अन्यथा पश्चाताप ही हाथ लगेगा और परिश्रम व्यर्थ जायेगा। अतः मुक्ति के पथ के पथिक को विश्व के कल्याण हेतु शुभ कर्मों को कर डाले।

संग्रहकर्ता व अनुवादक
कविराज रघुनन्दन सिंह 'निर्मल'

दयानन्द शास्त्रार्थ संग्रह - मूर्तिपूजा

(पं० रामलाल शास्त्री से बम्बई में शास्त्रार्थ - २७ मार्च, १८७६)

जब स्वामी जी बम्बई से पूर्व की ओर जाने को उद्यत हुए उस समय यहाँ के पण्डितों ने स्वयं दूर रहकर रामलाल जी को, जो नदियांशान्ति के विद्वान थे, शास्त्रार्थ क्षेत्र में आने के लिए उद्यत किया। उसने एक हूकाभाई जीवन जी के घर में बहुत झगड़े के पश्चात् चैत सुदि संवत् १६३३ सोमवार के दिन शास्त्रार्थ आरम्भ किया। बहुत से भद्रपुरुष उस शास्त्रार्थ के समय उपस्थित थे। दोनों पक्षों की सम्मति से पण्डित बहुजाऊ जी शास्त्री घारीपुरी निवासी सभापति निश्चित हुए।

स्वामी जी – वेद के किस मन्त्र से मूर्तिपूजा का विधान है सो बतालाइये ?

जवाब में पण्डित रामलाल जी पुराण और स्मृतियों के श्लोक बोलने लगे।

स्वामी जी – ये ग्रन्थ मानने के योग्य नहीं हैं। वेद का यदि कोई मन्त्र स्मरण हो तो कहिए।

पण्डित जी ने मनुस्मृति के वे श्लोक जिनमें प्रतिमा, देव शब्द थे बोले।

स्वामी जी ने सब श्लोकों के यथार्थ प्रमाण सहित अर्थ कर दिये कि इनका मूर्तिपूजा से कोई सम्बन्ध नहीं है। पण्डित जी फिर और स्मृतियों और पुराणों के श्लोक बोलने लगे परन्तु अन्त तक वेद का कोई मन्त्र न बोले।

तब मध्यस्थ बहुजाऊ जी शास्त्री बोले कि रामलाल जी ! स्वामी जी प्रश्न कुछ और करते हैं और आप उत्तर कुछ और ही देते हैं। यह सभा का नियम नहीं है। जैसे किसी ने किसी से द्वारिका का मार्ग पूछा और बतलाने वाले ने कलकत्ते का मार्ग बतलाया। इसी प्रकार का यह आपका शास्त्रार्थ है। ऐसा कहने पर भी रामलाल ने कोई वेद का प्रमाण नहीं दिया। तब सब की सम्मति से सभा विसर्जित हुई और सभापति ने सब से स्पष्ट कह दिया कि "आज पण्डित रामलाल जी इस सभा में पाषाण–पूजन वेदोक्त सिद्ध न कर सके।"

इस प्रकार सत्य कह देने पर इस सत्यवक्ता शास्त्री को कितने ही स्वार्थी पण्डितों ने सताने में कोई कमी न रखी।

फिर चैत संवत् १६४० में इन्हीं पण्डित महोदय की मैनेजर से भेंट हुई।

मैनेजर – आपने संस्कृत विद्या का बहुत दिन तक अध्ययन किया है और आप इस भाषा के विद्वान् है और धर्मशास्त्र के ग्रन्थ देखे होंगे और आपके अतिरिक्त काशी आदि स्थानों में और भी बहुत विद्वान् है और स्वामी दयानन्द सरस्वती भी बड़े विद्वान् है सो आप सब लोग जानते होंगे। फिर क्या कारण है कि आप लोगों और स्वामी जी की धर्म–सम्बन्धी विषयों में बातें नहीं मिलती हैं। स्वामी जी चारो वेदों को प्रामाणिक मानते हैं तब उनमें लिखी बातों को क्या आप लोग सिद्ध नहीं कर सकते ?

जो स्वामी जी सत्य कहते हैं तो आप लोगों को उनका कहना मानना और जो असत्य कहते हैं तो उनकी बातों का सभा में खण्डन करना चाहिए। सो आप लोग दोनों बातों में से एक भी नहीं करते, इसका क्या कारण है ?

पण्डित रामलाल जी – स्वामी जी तो सन्यासी है, उनको किसी की परवाह नहीं। उन्होंने वेदादि शास्त्रों का अध्ययन बहुत दिनों तक किया है। वे समर्थ हैं, उनकी बुद्धि बड़ी प्रबल है। वे कहते सो शास्त्रानुसार सत्य ही कहते हैं परन्तु हमारी शक्ति नहीं कि उनका सामना कर सकें क्योंकि हम लोग गृहस्थ हैं, हमें अनेक बातों की अपेक्षा बनी रहती है फिर हम स्वामी जी की सी बातें कैसे कह सकते हैं ? संसार में और भी चर्चा फैली हुई है जो उसके विरुद्ध कहें तो हमारे कहने से भी कुछ न हो और लोग विमुख हो जावें, फिर आजीविका ही जाती रहे, तब निर्वाह कैसे होगा ?

मैनेजर – इससे तो यही सिद्ध होता है कि आप अधर्म की जीविका करते हैं क्योंकि आप जानते हैं कि यह बात मिथ्या है फिर उससे द्रव्योपार्जन करना अधर्म है। देखो ! स्वामी जी ने असत्य को छोड़कर सत्य ग्रहण किया तो थोड़े समय में उनका कितना मान हुआ है। इसी प्रकार आप लोग भी सत्य को स्वीकार करें तो वैसा ही सम्मान और नाम आप लोगों का क्यों न हो ?

पण्डित रामलाल जी – क्या करें, सर्व संसार में ऐसी ही प्रवृत्ति हो रही है, उससे विरुद्ध हम लोग कुछ कहें तो कोई नहीं मानता। इस प्रकार तो स्वामी जी का ही निर्वाह हो सकता है, हम गृहस्थों का नहीं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के वचन

- "क्या किया जाये ? जिनके लिए हम उपकार करते हैं वे उल्टे विरोध करते जाते हैं, अच्छा ! जो दुष्ट–दुष्टता को नहीं छोड़ते, श्रेष्ठ श्रेष्ठता को क्यों छोड़े।"
- "जो विद्या के चिह्न यज्ञोपवीत और शिखा छोड़कर मुसलमान ईसाईयों के सदृश बन बैठना, यह भी व्यर्थ है। जब पतलून आदि वस्त्र पहनते हो और तमगों की इच्छा करते हो, तो क्या यज्ञोपवीत आदि का कुछ बड़ा भार हो गया था ?"
- जब तक मनुष्य मन से सब कुछ त्याग नहीं देता तब तक भगवान को पा नहीं सकता।
- वही सच्चा वीर है जो संसार की माया के बीच रहकर भी पूर्णता को प्राप्त करता है।
- शुद्ध ज्ञान और और शुद्ध भक्ति दोनों एक ही हैं।
- विवेक और वैराग्य के बिना ज्ञानशास्त्र व्यर्थ है।
- मन के हाथी को विवेक के अंकुश से वश में रखो।
- विश्वास जीवन है, संशय मृत्यु है।

रहेजा डवलपर्स को ग्रीनटेक पर्यावरण और सीएसआर एवार्ड

श्री भास्कर चटर्जी, आईएएस, डीजी व सीईओ इंडियन इन्स्ट्टीयूट ऑफ कॉरपोरेट अफेयर्स, कॉरपोरेट कार्य मंत्रालय व श्री कमलेश्वर शरन, प्रेसीडेंट - ग्रीनटेक फाउण्डेशन के हाथ से पुरस्कार ग्रहण करते हुए सीनियर मैनेजर संजना राणा, रहेजा डवलपर्स ।

२६ जनवरी को जेडब्ल्यू मैरिएट होटल, चण्डीगढ़ में आयोजित १४वें वार्षिक ग्रीनटेक पर्यावरण और सीएसआर एवार्ड समारोह में में रहेजा डवलपर्स को तीसरे वार्षिक ग्रीनटेक पर्यावरण और सीएसआर एवार्ड – २०१३ में रजत श्रेणी के लिए पुरस्कृत किया गया। यह पुरस्कार कम्पनियों को उनके सामाजिक दायित्व के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के उच्चतम स्तर के लिए दिया जाता है। इस पुरस्कार का उद्देश्य ऐसी कम्पनियों को प्रोत्साहित करने के लिए दिया जाता है जो समाज और देश के प्रति सीएसआर (निगमित सामाजिक दायित्व) के क्षेत्र में विशेष योगदान दे रही हैं। ग्रीनटेक फाउंडेशन पुरस्कार व्यावसायिक उत्कृष्टता और स्थिरता में सीएसआर के आंतरिक मूल्यों को समझने के लिए एक प्रेरणा का काम करते हैं।

ग्रीनटेक फाउण्डेशन पुरस्कार कड़े गुणवत्ता मानकों, विश्वसनीयता और उनके सम्मान और वैश्विक कद बढ़ाने के पुरस्कार विजेताओं की सक्रिय प्रथाओं का सम्मान करने का अनूठा तरीका है। यह सम्मान पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों के उपयोग के लिए प्रोत्साहित करता है तथा स्वच्छ प्रौद्योगिकी, ऊर्जा दक्षता और जलवायु परिवर्तन सहित पर्यावरण की रक्षा करने के लिए कचरा प्रबंधन की वैज्ञानिक, तकनीकी और व्यावहारिक तरीकों के उपयोग को बढ़ावा देता है। तथा ऊर्जा और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में तकनीक को प्रोत्साहित करता है।

संकल्प पर्व पर कुछ सुझाव

पं. राम कृष्ण शर्मा

स्वामी दयानन्द जी ने समाज में फैले अंधविश्वासों, भ्रष्टाचार, पाखंड आदि कुरीतियों का खंडन किया। स्वामी जी का मत था कि वेदों के प्रसार और प्रचार से ही मानवता का कल्याण हो सकता है, वेद ही एकमात्र रास्ता है जो सम्पूर्ण मानव जाति को मानवता का संदेश देता है। पर प्रश्न यह उठता है कि वेद का प्रचार कौन करेगा ? यह उत्तरदायित्व किसका है ? तो स्पष्ट है कि यह कार्य प्रचारकों, उपदेशकों, साधु–सन्यासियों का है। परन्तु उपरोक्त सभी जन वेद प्रचार करना भी चाहें तो नहीं कर पाते, जो एक ईसाई मिशनरी कर पाता है, वे उस तरह से नहीं कर पाते इसका कारण है कि हमारे आर्य समाज के संविधान में कार्यपालिका की शक्ति अधिक है, प्रचारकों की शक्ति है ही नहीं। स्वतंत्र रूप से कार्य करने और निर्णय करने की शक्ति उनमें नहीं है। मुझे नहीं लगता कि आर्य समाज में किसी प्रचारक को ऐसी शक्ति मिली हो कि वह वेद प्रचार के लिये धन व्यय करना चाहे तो कर सके, किसी स्थान पर स्वतंत्र रूप से जाना चाहे तो जा सके। मेरे यहां नैरोबी में ईसाई मिशनरी को बाईबल का प्रचार करने के लिये अफ्रीका भेजा जाता है, सर्वप्रथम उनकी संस्था पूर्ण रूप से उसके परिवार का ध्यान रखती है, उसके बच्चों की शिक्षा का उत्तरदायित्व उन पर होता है, जहाँ उनको भेजा जाता है, वहाँ पर सभी आधुनिक सुविधाएं होती हैं, अर्थात् उस व्यक्ति को कोई चिन्ता नहीं होती फिर वो धर्म का प्रचार करता है, लोगों को अपने धर्म में लाता है। एक अहमदिया संप्रदाय का मिशनरी अफ्रीका में आता है, उसकी संस्था उसको हर प्रकार की सुविधायें तो देती ही है, साथ–साथ गरीबों की सहायता करने के लिये धन भी देती है, वो अपनी इच्छा के अनुसार धन व्यय कर सकते हैं।

इसके विपरीत हमारी संस्था है जो उपदेशकों को कुछ सौ रुपये देती है और उनसे मिशनरी कार्य न करवा एक समाज में पुरोहित बना देती है और जो वेतन उनको दिया जाता है वो भी प्रचारक की जिम्मेदारी होती है कि वो दान के रूप में लोगों से एकत्रित करे। अभी हाल में ही मैं भारत आया था और जालन्धर की एक प्रतिष्ठित समाज में गया। पुरोहित जी को देखकर लगा कि कोई भिखारी है, वो लग ही नहीं रहा था कि किसी समाज का पुरोहित है। मंत्री महोदय उसके साथ ऐसा व्यवहार कर रहे थे कि जैसा चपरासी के साथ भी आजकल नहीं किया जाता। –जरा दो कप चाय तो भिजवा दो, वहां से फाईल ढूंढ कर लाओ, ऐसे शब्द बोलकर उनको सम्बोधित किया जा रहा था। दुःख का विषय हे कि आर्य समाज पुरोहित और प्रचारक को कोई अधिकार नहीं देना चाहती है और यही कारण है कि कोई भी प्रचारक अपनी सन्तानों को प्रचारक नहीं बनाना चाहता। आज हमारे पास उपदेशक विद्यालय नहीं हैं, मुख्य रूप से एक ही विद्यालय है अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय, टंकारा। जहाँ से शिक्षित स्नातक आज सर्वत्र प्रचार के कार्य में लगे हुए हैं और जिम्मेदारी के साथ प्रचार का काम कर रहे हैं।

मुझे प्रसन्नता है कि यहाँ नैरोबी में, मैंने चारों वेदों के शतक बनाये और उसका अनुवाद अंग्रेजी में किया और आज कोई घर ऐसा नहीं कि जिसमें चारों वेदों के शतक न हों, इतना ही नहीं बल्कि

तन्जानिया, युगाण्डा, जाम्बिया, बोत्सवाना आदि अफ्रीकन देशों में भी वैदिक साहित्य को बांटा जाता है क्योंकि मैं समय–समय पर इन देशों की यात्रा करता रहता हूँ। यह सब इसलिये हो पाता है कि मुझे हर प्रकार की सुविधाएं और स्वतंत्र रूप से कार्य करने की आज्ञा है।

मैं चाहता हूँ कि ऋषि बोध अवसर पर हम कोई ऐसी व्यवस्था करें कि योग्य, कर्मठ और जिम्मेदार मिशनरी टाईप के सुयोग्य प्रचारकों की सेवाएं लें और उनके परिवार और बच्चों की जिम्मेदारी उस संस्था पर होनी चाहिए। उसके साथ ही इलेक्ट्रोनिक मीडिया तथा प्रिन्ट मीडिया का भी पूरा सहयोग लिया जाए। प्रचारकों को दलगत राजनीति से दूर रखा जाये जैसा कि नैरोबी में होता है शायद यही कारण है कि मैं पिछले २१ वर्षों से कार्य कर रहा हूँ। कमेटियाँ आती हैं और चली जाती हैं, परन्तु हमें राजनीति से कुछ भी लेना–देना नहीं, हमें केवल प्रचार करना है और सुविधाएं हमारे पास हैं। यह कार्य सार्वदेशिक सभा को अपने हाथ में लेना चाहिए ताकि विदेशों में प्रसारकों को भेजा जाए और प्रान्तीय सभाओं को देश में कार्य करने के लिए यह जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

(प्रचारक, आर्यसमाज नैरोबी, पूर्वी अफ्रीका)

मीठी वाणी

मधुर वचन आबाल बृद्ध सभी को सुहाते हैं। कोयल मीठी वाणी बोलती है उसकी कू–कू की कुहुक सुनकर सभी मुग्ध हो जाते हैं। मीठी वाणी एक ऐसा आकर्षण है जिसके प्रति सभी जन मन से आकर्षित हो जाते हैं। कहा भी है –

कागा कासो लेता है कोयल काको देत। मीठे वचन सुनाय कै जगवश कर लेत।।

अतः बच्चे बचपन से ही जब मधुर स्वर में बोलेंगे तो सभी वयस्क और गुरुजन बच्चों के प्रति प्रसन्नता अभिव्यक्त करेंगे। यहाँ महाकवि तुलसीदास जी भी कहते है –

वशीकरण एक मन्त्र है तजदे वचन कठोर। तुलसी मीठे वचन ते सुख उपजत चहुँ ओर।।

जो जन मीठा नहीं बोलते उनसे सभी लोग घृणा करते हैं। हम परस्पर प्रेमपूर्वक व्यवहार से आनन्दित रहें। किसी के भी प्रति अपशब्दों का प्रयोग न करें।

कठोर बोलने से अपना स्वयं का मन अशान्त रहता है। जबकि मीठी स्वराञ्जलि से सभी हृत्तन्त्री झंकार पड़ती है। संपेरा स्नेहिल एवं मीठी तान से बीन बजाकर मनुष्य तो क्या हिंसक विषैले नाग को भी काबू कर लेता है। यह उत्तम मीठी वाणी हम अपने घर से बचपन से ही सीखें और बोले ताकि माता–पिता और भ्राता भगिनी आदि सभी बच्चों से स्नेहिल व्यवहार करें।

हम पर माता–पिता का बड़ा उपकार है उनसे कदापि कठोर वचन न बोलें। माता–पिता स्वयं कष्ट में रहकर भी हमारा पालन–पोषण करते हैं। यह समझकर ही अपने मधुर स्नेहिल व्यवहार से ही हम सबको हर्षान्वित करें। अपने बड़ों के आशीर्वाद से हम आज के बच्चे कल के उच्च पदासीन योद्धा एवं श्रेष्ठ नागरिक बनेंगे।

कर्मों का फल

श्री हरिशचन्द्र वर्मा 'वैदिक'

सुख–दुःख संसारिक होने से क्षणिक और परिवर्तनशील होता है। यह सुख–दुःख अनेक कार्य–कारणों के द्वारा प्राप्त होता है। १. शरीर से जो कर्म किया जाता है वह शारीरिक, २. मन से जो चिन्ता भावना और दुर्भावना किया जाता है वह मानसिक और ईश्वर के प्रति जो योग, यज्ञ, ध्यान, उपासना किया जाता है वह आध्यात्मिक कर्म है। इसके अलावा मानसिक सुख–दुःख को आध्यात्मिक/अतिशीत, गर्मी, वर्षा और वायु जल प्रदूषण से जो सर्दी जुकाम होता है वह आधिभौतिक और जो कीड़े–मकोड़े, सर्प–बिच्छू के काटने से व्रजपात, भूकम्प, बाढ़, सूनामी से जो दुःख और मृत्यु होता है उसे आधिदैनिक ताप कहते हैं। इन तीनों पर मानव कर्म का ही प्रभाव पड़ता है। उनके स्वाभाविक नियम में जब मनुष्य कल–कारखानों के धुएँ तथा गन्दगी आदि से प्रदूषण फैलाकर उन देवी शक्तियों से छेड़खानी करता है। तभी अधिकतर बिजली के गिरने पर प्राकृतिक योग फैलने लगता है, जिनके प्रकोप से अनेक नुकसान और लोग मारे जाते हैं। इस प्रकार संसार के सभी लोग अपने–अपने पूर्व एवं वर्तमान कर्मों के द्वारा किसी न किसी दुःखों से पीड़ित रहते हैं।

जो कोई भी कर्म करता है उसका फल दो प्रकार का होता है। एक स्थूल और दूसरा सूक्ष्म/स्थूल फल–मेहनत, मजदूरी अथवा मुनाफा, एक दिन या सप्ताह अथवा वर्ष में अवश्य मिलता है। अच्छी नीयत से किया गया कर्म का संस्कार आत्मा पर अच्छा ही पड़ता है। पर जिस स्वार्थ, रिश्वत, भ्रष्टाचार अथवा काला धन कमाया जाता है उस स्तेय का अनुचित संस्कार उसके आत्मा को आच्छादित करता रहता है।

इस प्रकार काम वासना में अंधा होकर जो लड़कियों का बलात्कार अथवा यौन–शोषण करता है। इस पाप कर्म का भी संस्कार उसके आत्मा को मलीन कर देता है और जब पकड़ा जाता है तब न्यायालय से उसे दण्ड अवश्य मिलता है, पर उसका संस्कार नहीं घुलता वह तभी छूटता है जब वह ऐसे पाप कर्मों से बिल्कुल पृथक हो जाता है। भ्रूण हत्या भी महापाप है ऐसे कुकर्म करने वालों का आत्मा पर पड़े अन्याय के संस्कार कभी मिटते नहीं है जब तक कि दुष्कर्म न करने का सकंल्प ले लेते।

आज संसार इतना हिंसक हो गया है कि वह हिंसक जानवरों से भी बढ़ गया है, ऐसे लोग मरने के बाद उनकी आत्मा हिंसक योनि नहीं जाती है। क्योंकि शराबी, जुआरी और चोर कभी भी अच्छे और भद्र मनुष्यों के यहाँ जाना अच्छा नहीं समझते। कोई भी अपराधी जिनके कुकर्मों के संस्कार से आत्मा मलीन हो गया है अथवा जो समाज में बदनाम हो गया है, जब मनुष्य बुरे कर्मों को छोड़कर अच्छे कर्म करने लग जाता है, तब क्रमशः उसके आम व्यवहार से, उसके आत्मा पर पड़े बुरे संस्कार भी नष्ट होने लग जाते हैं।

तात्पर्य यह कि जीवन में कर्मानुसार जैसा जिसका आत्मा पर संस्कार पड़ा रहता है उसे

ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के अनुसार उसी योनि में जन्म लेना पड़ता है। जैसे हिंसा अहिंसा में भेद है वैसे ही अपराध में भी अन्तर है। अदृश्य, कृमिकीट, मक्खी, मल, मच्छर, रोग फैलाने वालों और उड़ने, रेंगने वाले जितने हिंसक जीव है उन्हें मारने में कोई हिंसा नहीं है। पर पशु–पक्षी उपकारक प्राणियों को मारने में हिंसा है। इससे बढ़कर, हिंसा और पाप गुरु, बालक, नारी, वृद्ध और वेद विद्या के ज्ञाता की है जिन्हें कभी नहीं मारना चाहिए। परन्तु यदि मानव आतंकवादी और हत्यारा है और जिनको मार देने से हजारों निरपराध मनुष्यों की रक्षा होती है उसे तुरन्त मार देना ही अहिंसा धर्म का पालन है। इसके अलावा भूख से तंग आकर स्तेय का उतना बड़ा अपराधीन ही होता जितना की सम्पत्तिशील भ्रष्टाचारी होते हैं।

इस प्रकार पाप और पुण्य कर्मों में अन्तर होता है। मनुष्य को जहाँ तक हो सके किसी दूसरे को दुःखी करके स्वयं को सुखी न समझें। अच्छे कर्म और न्यायपूर्वक भोग करें। अपनी आत्मा की आवाज को सुने, अवहेलना न करे। लोभवश कोई अनुचित कर्म न करे।

मनुष्य जैसे स्वतन्त्रता से कर्म करता है वैसे ही परमात्मा उसे उसका फल इसी दुनिया में भोगना पड़ता है और जो शेष घर रह जाता है उसे भोगयोनि में जाकर भोगना पड़ता है और जो अपने जीवन में अच्छे कर्म अधिक किये रहते हैं वे पुनः उभययोनि अर्थात् मनुष्ययोनि को ही प्राप्त होते हैं।

सुख, दुःख, स्त्री, सुत, सम्पत्ति और मान–अपमान, सब पूर्व एवं वर्तमान कर्मों के ही फल होते हैं, जिसका हेतु समझ में नहीं आता, इसलिए उसे पूर्व जन्म के शेष कर्मों के फलों से जोड़ दिया जाता है, जो उसे इस जन्म में प्राप्त होता है।

ज्योतिषी लोग इसे भाग्य और नक्षत्र का कारण बताते हैं जो बिल्कुल गलत है, क्योंकि एक साथ एक सेकन्ड में दो शिशु का जन्म होता है किन्तु दोनों का आयु, सुख–दुःख, आहार–विचार पृथक–पृथक होता है।

संस्कार क्या है ? जैसे चमेली के फूल को कपड़े में बांधकर थोड़ी देर बाद उसे फेंक दीजिए, कपड़े में फूल नहीं है किन्तु वह अपना संस्कार रूपी गन्ध कपड़े में छोड़ दिया। कर्म समाप्त हो गया पर उसका सूक्ष्म संस्कार उसके चित्त पर पड़ जाता है। इसी प्रकार जैसा संस्कार उस पर पड़ता रहता है, उस व्यक्ति का वैसा ही सोच–समझ और कर्म होता रहता है। संस्कार के अनुसार ही स्वभाव बनता है और जैसा स्वभाव बनता है, वह वैसा ही कर्म करता है। कर्म प्रधान होने से वह स्वयं को परिवर्तन भी कर सकता है। मनुष्य अपने कर्मों का स्वयं भोक्ता है।

भोजन उसे स्वादिष्ट लगा, अधिक खा लिया, किन्तु बाद में उसका उदर खराब हो गया। पेट में दर्द होने लगा। यहाँ ईश्वर का कोई दोष नहीं, उसने कर्म ही ऐसा किया कि उसे दुःख भोगना पड़ा। अतः विधाता का विधान ही ऐसा है कि जैसा बीज बोया जाता है उसका फल वैसा ही मिलता है।

कर्मफल व्यवस्था बड़ा ही विचित्र है। जब बालक बीमार हो जाता है तो वह तो कष्ट भोग करता ही है, साथ ही उसके माता–पिता भी दुःखी और कष्ट भोगते हैं। यह भी उनके कर्मों का ही फल है, न सन्तान के लिए कर्म करते और न उन्हें उस बालक के प्रति सुख–दुःख में सुखी–दुःखी होना पड़ता।

स्वामी अखिलानन्द सरस्वती जी लिखते हैं कि 'सृष्टि में मनुष्य का आना, मनुष्य के अच्छे और बुरे कर्मों के कारण हुआ है। यदि उसके अच्छे कर्म अधिक है तो मनुष्य बन गया है। यदि बुरे कर्म अधिक है तो पशु–पक्षी हो जाता है। यदि कर्म इतने अच्छे अधिक होते कि कर्म वासना की न रहती तो कर्म–बन्धन से पृथक हो जाता। अच्छे–बुरे कर्मों का भोग मुझे सुख और दुःख रूप में प्रभु की व्यवस्था से मिलता है और यह भी निर्विवाद सत्य है कि मनुष्य प्रत्येक विपाक की अर्थात् सुख–दुःख रूपी कर्म फल की किन्हीं साधनों द्वारा प्राप्त करता है। किसी प्राणी को यदि कर्म का विपाक प्राप्त होता है तो उसे सबसे पहले उस कर्म को प्राप्त करनक के लिए शरीर रूपी साधन की आवश्यकता है।

कोई भी सुख–दुःख इस संसार में किसी भी प्राणी को बिना किसी साधनों को प्राप्त हो यह असंभव है। मनुष्य को तीन साधनों से सुख–दुःख प्राप्त होते है। आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधि दैविक। इन तीनों प्रकार के सुख, दुःखों को प्राप्त करने और भोगने के लिए मनुष्य के पास ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों, मन और बुद्धि अपने कर्मों के विपाक प्राप्त करने, भविष्य के लिए कर्म करने और पूर्व जन्म के कर्मों के फल भोगने के लिए साधनरूप में दिए हैं। मनुष्य जिस दिन दुनिया में आया है वह जन्मदिन और जब इस दुनिया से जाता है, वह मृत्यु दिन है। इन दोनों के मध्य के समय को आयु कहते हैं। आयु परमात्मा देता है और जन्म से पूर्व आयु देता हैं हम प्रार्थना भी करते हैं **''स्तुतामया बरदा' आयुदाअग्नेसि आयुर्मेदिह''** इत्यादि मन्त्रों से स्पष्ट है कि परमात्मा आयु देता है (अथर्व. १६.१.७) और योगदर्शन में आया है कि जाति, आयु और भोग कर्मफल हैं किन्तु कर्म प्रधान होने से उसके द्वारा आयु को न्यूनाधिक भी किया जा सकता है। क्योंकि **''जीवेमः शरदः शतम्''** (यजु. ३६.२४) हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि सौ वर्ष तक जीवे।

धर्म मार्ग

एक एव सुहृद धर्मो निधनेऽप्यनुयाति यः।
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यद्धि गच्छति।।

-मनुस्मृति

मनुष्य का एकमात्र मित्र है – धर्म, जो कि मरने के बाद भी साथ रह जाता है, शेष सभी शरीर नाश के साथ ही नष्ट हो जाता है। संसार में व्यक्ति भूल से अनेकों को अपना सहायक माने रहता है, जबकि ये संसारी जन केवल स्वार्थवश जुड़े रहते हैं, चाहे वह धन है, पशु है अथवा अन्य पारिवारिक लोग हैं, जीते जी के साथी हैं।

संघर्ष

डॉक्टर एस.एम.रहेजा
अतिरिक्त चिकित्सा अधीक्षक

वार्ड–१०, समय दोपहर ३ बजे एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति मेरे सामने खड़ा हाथ जोड़ कर मदद की फरियाद करता है, जैसे ही मेरी नज़र उस पर पड़ी वो एक धोती कुर्ते में गाँव का भोला–भाला आदमी था जिसकी आँखों में मैंने एक अजीब सी उम्मीद देखी, क्यों, मुझे लगा कि मुझे इसकी बात सुननी चाहिए। मैंने पूछा............. बोलो क्या बात है भाई और उसने मुझे जल्दी से अपनी पत्नी का Psychiatry O.P.D. का कार्ड थमा दिया और बोला साहब मुझे जल्दी से यह दवा दिला दीजिए, मुझे कुछ बात समझ में नहीं आई तथा मैंने सवाल कर दिया क्यों भाई क्यों जाकर O.P.D. से दवा ले लो, तब वो भरे गले से फरियाद करने लगा, साहब मैं बहुत देर से लाइन में लगा था, पर नम्बर आने पर बताया गया दवा लेने के लिए कल सुबह आना। मुझे न जाने क्यों उसमें दिलचस्पी लगी और मैं उसे अपने कमरे में ले आया और कुर्सी पर बैठा कर पूछना शुरू किया कि तुम्हे ये दवा लेने कि ऐसी क्या जल्दी है, तब उसने अपनी पूरी कहानी सुनानी शुरू की, बोला साहब कुछ समय पहले मेरे पिता जी बहुत बीमार थे मैंने गाँव में बहुत इलाज किया पर कुछ फायदा नहीं हुआ। एक रात उनकी तबियत बहुत बिगड़ गई, मैं पास के डॉक्टर के पास गया। उसके बहुत हाथ–पैर जोड़े पर उधार के पैसे न देने की वजह से डॉक्टर ने आने से ही मना कर दिया। मैं रात भर ही यूं ही भटकता रहा लेकिन कुछ नहीं कर पाया और आखिर सुबह मेरे पिता जी ने दम तोड़ ही दिया, जो पैसा था वो पहले ही पिता जी के इलाज में खर्च हो चुका था और ऊपर से कर्जा। इस आर्थिक तंगी और परेशानियों से मेरी पत्नी का दिमाग भी हिल गया और वो बहकी बहकी बाते करने लगी, साहब मेरे दो बच्चे है और सिर्फ चार बीघा ज़मीन, दो डांगर (भैंस)। तब मैंने पूछा कि आप लोग घर का खर्चा कैसे करते हो तो उसका मन भर आया। साहब ज़मीन से सालाना आमदनी होती है साठ–सत्तर हजार रुपये और बाकी कुछ डांगर का दूध बेच कर घर का खर्चा चला लेता हूँ, बड़ा लड़का ६वीं कक्षा में है और प्राईवेट स्कूल में पढ़ता है मैंने पूछा अरे प्राईवेट स्कूल की फीस कैसे देते हो तो उसने बोला मेरा बेटा पढ़ने में होशियार है और कक्षा में हर बार प्रथम आता है, स्कूल के प्रधानाचार्य ने कह दिया है जब नौकरी करके कमा लेगा तो फीस लौटा देना, छोटा बेटा सरकारी स्कूल में है। खराब दिमागी हालत की वजह से घरवाली कुछ काम नही कर पाती। तब मैंने उत्सुकता से पूछा तो घर कौन सम्भालता है तब उसने बड़े आत्मविश्वास से जवाब दिया साहब मैं खुद।

सुबह तड़के उठ कर डांगर को चारा डाल कर दूध निकाल लेता हूँ, और बच्चों के लिए खाना, बना कर बच्चों को स्कूल भेज देता हूँ फिर घर वाली को खाना खिला कर खेत चला जाता हूँ। बच्चे

समझदार हो गये है स्कूल से आकर खुद ही खाना खा लेते है मैं शाम को खेत से आकर घरवाली को खाना खिलाता हूँ और खुद भी खा लेता हूँ। डांगर का दूध निकाल कर रात का खाना बनाता हूँ, बच्चे भी कभी कभी मेरी मदद कर देते है। तब उसने मुझे बताया साहब जी. बी. पन्त अस्पताल कि इस दवा से मेरी घरवाली को बहुत आराम है पर दवा ना खाने से बहकी–बहकी बाते करने लगती है, मैंने यूं ही पूछ लिया तुम्हारा गाँव कहा है? साहब एलम के पास कनियान गाँव, तब मैंने सुझाव दिया भाई ये दवा तो वहां किसी भी कैमिस्ट से मिल जाएगी, इतना तो तुम्हारा आने–जाने में किराया ही लग जाता होगा तब उसने पूरा हिसाब किताब इस प्रकार समझाया साहब मैं सुबह छः बजे की पैसेन्जर गाड़ी से दिल्ली ८.०० बजे पहुचता हूँ और ओ.पी.डी. लाईन में लग कर १५ दिन की दवा लेकर शाम को ५.०० बजे की गाड़ी से वापिस चला जाता हूँ कुल खर्चा लगभग ५०–६० रुपये होता है और १५ दिन की दवा खरीदने का खर्चा लगभग २७५–३०० रुपये होता है मुझे इस प्रकार हर महीने ४५०–५०० रूपये बच जाते है जो बच्चो के स्कूल का खर्चा करने में काम आते है।

इतना सुनते सुनते मेरी आँखे भर आई और मैं खुद की सारी मुश्किले और इच्छायें भूल कर अपने आप को ही भूल गया, ना जाने कब मेरा हाथ टेलीफोन के रिसीवर पर गया और मैंने एक नम्बर डायल करके कहा .... मरीज पतासो के पति फते सिंह को भेज रहा हूँ दवा ज़रा जल्दी दे देना। इसकी ५.०० बजे की गाड़ी है प्लीज, लेकिन जवाब आया सर कम्प्यूटर में कुछ खराबी है तब मैंने उससे रिक्वेस्ट की..... प्लीज़ इसे दवा दे दो, इसका नाम और कार्ड का सी.आर. नम्बर लिख लो, एन्ट्री बाद में कर लेना ये बहुत दूर गाँव से आया है, हमें इसकी मदद करनी चाहिए, उधर से जवाब आया ठीक है सर। मैंने उसे जैसे ही फटा–फट जाकर ओ.पी.डी. से अपनी दवा लेने को कहा, ये सुनते ही उसके चेहरे पर धन्यवाद् के भाव आये पर वह बिना कुछ बोले ही चला गया। उसकी खुशी को बयान करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है। जैसे वो जिस उम्मीद से आया था वो उसकी पूरी हो गई उसके बाद वो आज तक मेरे पास कभी नही आया मुझे नही पता उसे दवा मिली या नही, मुझे नही पता कि वो समय से अपने गाँव की गाड़ी पकड़ पाया या नही और समय से घर पहुँच पाया या नहीं। लेकिन एक गाँव के सीधे साधे व्यक्ति ने मुझे बिना घबराये मुश्किलो का सामना कर लगातार संघर्ष करते हुए जीवन जीने का रास्ता दिखा दिया। ना जाने कितने मरीज़ों की ऐसी संघर्ष भरी जिंदगी और अनकही अनसुनी बातें होगी। ना जाने किस मजबूरी में कितने मरीज़ अस्पताल की लाईनों में खड़े रहते है।

सीधी–सीधी बात पर आधारित

डॉक्टर एस.एम.रहेजा
अतिरक्त चिकित्सा अधीक्षक

Some Golden Tips for the safety at home at any age

Dr. Ajay Mehta
Consultant ,Fortis Hospital

Birth – 1 year
At the hospital – Restrict visitors for initial one week.
At home- cleanliness and bacteria free environment to be maintained .
Hygiene of the mother and feeding should be looked into..
Care of umbilicus should be done using cleaning solution.
Baby should be Kept away from pets.
Do not let small children handle the baby alone at any time.
Make regular hospital /clinic visits to ensure all immunizations on time.
1-4years.
Elders in the home should be encouraged to spend quality time with the child. This not only gives support to the parents but also builds a good relationship of grandparents with their grandchildren.
Eating and playing should be supervised all the times. Well exposure to sun is good.
Keep away from pan/cola/tea coffee/alcohol/smoke/dust/chemicals.
Teach the toilet habits, keeping the place clean/well lit/dry.
The child is very inquisitive and always learning. Teach safe use of toys and other gadgets at home.
Tell not to eat from any unknown source. Not to talk or go with any unknown person.
Eat and drink with utmost cleanliness.

School going
Learn and use all good manners and etiquettes.
Dress properly for school and play.
Keep sharp pencils, pens and other sharp stationary safely .
Do not put pencil or other articles in mouth.
Report any suspicion to teacher and/or parents immediately.
Be with other children when going out for picnics and outings.
Do Adventure only under supervision, and do not attempt any thing shown on tv /film/boosted by older children.
Young youth.
Be stable and manage your emotions ,specially anger.
Utilize energy in constructive works.

Plan your life ,have clear goal orientation .
Do not indulge in bad habits or short "kicks"/pleasures.
Take calculated risks if must.
Help fellow colleagues after helping yourself.
Learn First Aid and C P R.
join some institution like rotary/loins/ local club of reputation to do some social work for the benefit of the society.

Golden Old

Be healthy and get frequent check ups. Medical examinations, Including prostate check.
Blood pressure monthly and ECG yearly is must. Dental care regularly.
Keep away from extreme conditions/ take adequate precautions

Eye sight may need frequent change of glasses. Drive cautiously (glare can be there)
Eat fat free and highly nutritive native food.
Medicines intake can be entrusted to a local doctor and one adult responsible person for it should never be missed.
All Vitamins and salt, clean water and fruits, nuts and milk should be included in every day diet.
Keep in touch with your old friends and share every things openly.
Join some religious group and be regular.
Help family in any way, like wise society in any capacity.
Accidents can happen, keep bathroom safe with railing , keep a safe walking stick.
Do not travel alone.
Give your phone number to 2/3 people and be in touch .
Keep the relatives and doctor's number , with you all the time .
Home stair case and work place should be well lit (keep a torch) and non slippery.
Do regular exercise (yoga is good). Move all the joints every day.
And Above all- **ALWAYS KEEP SMILING**

आँखें निरोग कैसे रखें ?

1. 25 ग्राम काली मिर्च जैसी सफेद मिर्च (दखनी मिर्च)
2. 100 ग्राम बादाम गिरी, गुरबंदी (भारतीय)
3. 50 ग्राम कूजा मिश्री
4. 200 ग्राम भुने हुए काले चने छिलका उतार कर लें।

मिक्सी में पीस कर पाउडर बना लें। बच्चे को सुबह शाम एक चम्मच दूध के साथ दें। बड़े को सुबह शाम दो चम्मच दूध के साथ दें।

मानव जीवन का उद्देश्य

डॉ. महेश विद्यालंकार

भारतीय जीवन–चिन्तन का मूल स्वर रहा है – शरीर और संसार के साथ–साथ 'आत्मानं विद्धि' – अपनी आत्मा के स्वरूप तथा अपने लक्ष्य को भी जानना है। इसी से जीवन का कोई लक्ष्य निश्चित नहीं होता है, वे संसार के प्रवाह में बहते–लुढ़कते तथा बेचैन होकर जीवन–यात्रा पूरी करते हैं। बहुतों को तो जीवन के वास्तविक ध्येय का अन्त समय तक भी पता ही नहीं चलता है। अधिकांश यात्रा पूरी करते हैं। बहुतों को तो जीवन के वास्तविक ध्येय का अन्त समय तक भी पता ही नहीं चलता है। अधिकांश लोग जीते हैं, मगर उन्हें जीवन के लक्ष्य का पता ही नहीं है। जीवन कैसे जीना है और जीवन का मकसद क्या है, इसे न जानने वाले लोगों का जीवन कटी पतंग के समान होता है।

सोमवार को जन्म हुआ, मंगल को बड़े हुए, बुधवार को विवाह हुआ, गुरुवार को बच्चे पैदा किए, शुक्रवार को बीमार पड़े, शनिवार को अस्पताल गए, रविवार को चल बसे। आम आदमी के जीवन का यही चित्र है। पैदा हुए, पर बिना उद्देश्य जिए और मर गये। मानवजीवन का फिर लाभ क्या हुआ ? मनुष्ययोनि प्राप्त कर लेना ही जीवन नहीं कहलाता। सार्थक व उद्देश्यपूर्ण जीने को जीवन कहते हैं। सन्त के पास कोई वृद्ध सत्संग करने आए। बातों–बातों में पूछा – "बाबा, जीवन का उद्देश्य क्या है ?" सन्त मुस्कराए और बोले–"अब सत्तर वर्ष की आयु में जीवन का उद्देश्य पूछ रहे हो ? क्या अब तक जीवन बिना उद्देश्य के गुजार दिया ? अब जीवन में बचा ही क्या है ? असली जीवन तो निकल गया।" प्रभु ने हमें जीवन के साथ साधन, सुविधाएं और जो चाहा दिया। हमने इसके बदले में उसे क्या दिया ? उसने हमें सब कुछ दिया, हमने बदले में उसका धन्यवाद तक न किया। यह कथन हमें सावधान कर रहा है –

फूल चुनने आए थे, बागे हयात से। दामन में खार उलझा के रह गये।।

जीवन मानवतन पाकर जगत् में धर्म–कर्म तथा पुण्य–प्राप्ति के लिये आता है, मगर उलटे पाप, अधर्म व अपराध करके जाते समय पाप की गठरी सिर पर लाद कर ले जाता है और फिर अनेक योनियों में जन्म–मरण के चक्र में घूमने लगता है।

अनेक लोगों को पता ही नहीं है कि ये अमूल्य मानव जीवन किसलिये मिला है। वे नहीं जानते कि मैं कौन हूँ ? कहाँ से आया हूँ ? किसलिये आया हूँ ? क्या मेरा धर्म, और क्या मेरा कर्म है ? कहाँ जाना है ? मेरे जीवन का विराम और विश्राम कहाँ है? किसके पास पहुँचकर और किसको पाकर मैं जन्म–जन्म की भटकन से छूट सकता हूँ ? मेरी आत्मा की सच्ची चाहत क्या है ? मेरा मन मुझे चैन क्यों नहीं लेने देता है ? क्यों कुछ और–और की चाह में दिनरात पागल बना भटक रहा हूँ ? सब कुछ प्रभु द्वारा दिए जाने के बाद भी प्रसन्न, सन्तुष्ट, शान्त व सुखी क्यों नहीं हो पा रहा हूँ ? स्वयं भी दुःखी, दूसरों को भी दुःखी व परेशान कर जी रहा हूँ। जीवन को सुधारने, संभालने और सुखी बनाने वाली बातें आज का मनुष्य नहीं सोच व समझ पा रहा है। कपड़ों में दाग लगने पर लोग शरमाते हैं और ऐसे कपड़े नहीं पहनते हैं। परन्तु आश्चर्य है कि जीवन में चाहे कितने भी दाग लग जायें, कोई लज्जा नहीं आती। श्मशान पर शव को छूने के बाद स्नान करते हैं, पर किसी का खून खाते–पीते तनिक भी घृणा नहीं आती। समस्त धर्मग्रन्थों, महापुरुषों, यज्ञ, कथा, प्रवचन, पूजापाठ, मन्दिर, तीर्थ आदि का उद्देश्य है – हम अपने को जानें, संभालें,

सुधारें और परमात्मा की ओर चलने की भावना मन में जागृत करें। संसार से मन हटे और परमात्मा से जुड़े। सांसारिकता के साथ–साथ धार्मिकता तथा आध्यात्मिकता भी जागृत होनी चाहिए। जगत् के काम–धन्धे निपटाते हुए शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा और परमात्मा के लिये समय निकालना चाहिए। इससे जीवन सन्तुलित रहता और भटकता नहीं है। नश्वर चीजों से ऊपर उठ कर अनश्वर आत्मा–परमात्मा तक पहुँचना चाहिए।

वर्तमान मनुष्य का जन्म पहला और आखिरी नहीं है। कर्मानुसार जीवन शरीर बदलता रहता है। आवागमन का सिद्धान्त जीवन को बार–बार उच्चतम योनि प्राप्त करने की प्रेरणा देता रहता है। जीव कर्मफल भोगने के लिए विभिन्न योनियों में जन्म लेता है। एक विचारक सन्त प्रभु के आगे हाथ जोड़कर निरन्तर प्रार्थना करते थे और रोते–रोते कहा करते थे–'प्रभु ! जीवन का आज का भी दिन बेकार गया, जिन्दगी की कीमती दिन निकल गया, तुम्हारी कृपा और दर्शन नहीं हुए।'' जिसे अपने जीवनलक्ष्य का बोध हुआ है, वह व्यर्थ की बातों, झगड़ों, कामनाओं और वासनाओं में फँसता नहीं है। नदी हमें सीख दे रही है। उसके मार्ग में अनेक बाधाएं व कठिनाइयां आती हैं। वह सबको पार करती हुई अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती जाती है। ऐसे ही हम अपने जीवन–लक्ष्य को समझें और उसकी ओर बढ़ें। प्रातः–सायं नित्य विचार करना चाहिये कि आज का कीमती महत्त्वपूर्ण दिन जीवन में फिर कभी वापिस नहीं आयेगा। चेतावनी दी गई है–'कालः अश्वो धावति' समयरूपी घोड़ा बड़ी तेजी से भागा जा रहा है। बुद्धिमान् लोग घोड़े को आगे से और मूर्ख उसको पीछे से पकड़ते हैं। भाव यह है कि समझदार व्यक्ति समय का पूर्ण सदुपयोग करता है, जबकि अज्ञानी समय निकल जाने पर पछताता है। अनन्त जीवनयात्रा में मानव–जीवन ही ऐसा पड़ाव है, जिसको पाकर हम आवागमन के चक्र से छूट सकते हैं। हमें वे दो दिन कभी नहीं भूलने चाहिए–एक तो वह दिन जब दुनिया में आए थे। इसके विषय में सोचना चाहिए कि हम साथ क्या लाये थे। दूसरा वह दिन जब दुनिया से जायेंगे। तब सोचना चाहिए कि क्या साथ ले जायेंगे। धर्म, कर्म, पुण्य, यश, सत्कर्म आदि की पूँजी साथ जायेगी और अधर्म–पाप व अपयश यहीं रह जायेंगे।

संसार में करोड़ों व्यक्ति, पशु, पक्षी, कीड़े–मकोड़ों की तरह जीवन जीते, भोगते और चले जाते हैं। उन्हें पता ही नहीं जीवन क्यों मिला है। आज मनुष्य जीवन का उद्देश्य भूलता जा रहा है। चलते–चलते सारा जीवन गुजार देता है, मगर जीवनलक्ष्य की ओर दो कदम भी आगे नहीं बढ़ पा रहा है। वह अपने शरीर के लिये चौबीसों घंटे लगा रहता है। जो कीमती सदा रहने वाली आत्मा है, जिससे शरीर की कीमत है, उसके लिये उसके पास न समय है और न सोच है। शरीर की सुख–सुविधा के लिये भौतिक चीजें–मकान, गाड़ी भोग पदार्थ आदि एकत्र करने में ही अमूल्य जीवन निकल जाता है। विडम्बना यह है कि आत्मा को जानने तथा उसके पास बैठने की जिज्ञासा, भूख और फुर्सत भी नहीं मिलती है। इधर सोच–विचार ही नहीं जाता है। आम आदमी की सोच–कमाओ, खाओ और सो जाओ तक सीमित है। जीवन का लक्ष्य शरीर तक ही सीमित हो रहा है। शरीर से आगे हम सोच ही नहीं पा रहे हैं। देह को ही साध्य समझ रहे हैं। आदमी मशीन बना दिनरात भाग रहा है। न दिन को चैन और न रात को नींद आती है। जो रोटी, कपड़ा, मकान, धन–दौलत, सुख–भोगों तक ही जीवन का लक्ष्य मानते हैं, इन सब चीजों की पूर्ति के बाद ऐसे लोगों का अधिकांश समय मनोरंजन, ताश, सिनेमा, बाजार में घूमना–फिरना और व्यर्थ की बातों में गुजरता है। आम आदमी भोग पदार्थों तथा भोग साधनों को जुटाते–जुटाते जीवन व्यतीत कर जाता है। जीवन भर फुटबाल की तरह ठोकरें खाते–खाते अमूल्य मानवजीवन समाप्त हो रहा है।

प्रेरक शब्द कर रहे हैं –

कुछ तो समय निकाल आत्मशुद्धि के लिये। नरतन का उद्देश्य न केवल विलास है।।

आना जाना, बन्धु जाना, कुटम्ब-कबीला जाना, सब कुछ जाना।
फिर कुछ भी न जाना, उसको न जाना जिसके पास है जाना।

मनुष्य कहता है–''मैंने धन–दौलत जोड़ी। कोठी व फैक्ट्री बनाई। बैंक में पैसा इकट्ठा किया। बच्चे पढ़ाये, उन्हें आगे बढ़ाया। सबके लिये बहुत किया।'' यदि उससे पूछा जाए–''तुमने अपने लिये क्या किया, जो साथ जायेगा'', तो कोई जवाब नहीं बनता। जो सांसारिक चीजें एकत्र की हैं, वे सभी यहीं छूट जायेगी। कुछ भी साथ नहीं जायेगा। आजतक कोई भी धरती और धन को साथ नहीं ले जा सका है। जो साथ जायेगा, उसके लिये क्या किया और सोचा ? जब मृत्यु नजदीक दिखाई देती है, तब वह पछताता और रोता है। प्रेरक चेतावनी है –

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः, तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।
कालो न यातो वयमेव याताः, तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः।। भर्तृहरि

हमने विषयों को नहीं, उल्टे विषयों ने हमें भोग लिया है। हमने तप नहीं किया, तप ने ही हमें तपा दिया है। समय नहीं बीता, प्रत्युत उम्र निकल गई और हम भी जा रहे हैं। इतना होने पर भी तृष्णाएं कम नहीं हुईं, उल्टे हम ही बूढ़े हो गए। शास्त्रों का कहना है – ''जैसे गन्ने को चूसते समय स्वाद, मिठास तथा रस आता है और बाद को फीके गन्ने के छिलके बच जाते हैं, ऐसे ही भौतिक सुख भोगों को भोगते समय रस, स्वाद और सुख मिलता है परन्तु बाद में पदार्थ रसहीन, दुःखदायी व बेस्वाद लगने लगते हैं। हाथ में गन्ने की तरह फीके छिलके रह जाते हैं। स्थायी कुछ भी वस्तु हाथ में नहीं लगती है। उपनिषद् का ऋषि कहता है–''हे परमेश्वर ! यह जन्म–मरण का चक्र कब छूटेगा, कब नाना योनियों के दुःख, वेदना व चक्र से छुटकारा होगा ? कब आवागमन की अन्तहीन यात्रा पूर्ण होगी ?'' सारा जीवन हम अपने से अपरिचित बने रहते हैं। अपने को हम न जान पाते हैं और न पहिचान पाते हैं। बहुत से लोग जीवन को मूर्खतापूर्ण रीति–नीति से जीते हैं। जब यह दुर्लभ अवसर हाथ से निकल जाता है। तब रोते, पीटते व पछताते हैं। महाभारत की चेतावनी है–**'युवैव धर्मशीलः स्यादनित्यं खलु जीवितम्'।**

''युवावस्था से ही धर्माचरण आरम्भ कर देना चाहिये, क्योंकि यह जीवन अनित्य एवं अनिश्चित है।'' जब तक शरीर स्वस्थ है, आयु ढली नहीं है और इन्द्रियाँ साथ दे रही हैं, समझदारी इसी में है कि आत्मकल्याण के लिये प्रयत्न कर लेना चाहिये, नहीं तो घर में आग लगने पर कुआँ खोदने से क्या लाभ ! शाम होने पर बसेरा ढूँढने पर भटकन ही हाथ लगेगी। कल–कल करते–करते काल आ घेरता है। अच्छे काम में देरी मत करो। बुढ़ापे की भक्ति मजबूरी की भक्ति कहलाती है।

व्यक्ति को प्रतिदिन बैठकर सोचना चाहिये कि जो मैं जीवन जी रहा हूँ, वह उद्देश्यपूर्ण है या निरर्थक। आज लोगों की स्थिति ऐसी हो रही है–जागो और भागो। सभी तेजी से भागे जा रहे हैं। किसी को फुर्सत नहीं, किसी को पता नहीं कि कहाँ जाना है और मेरी मंजिल कहाँ है। जिन्दगी बिना पते के लिफाफे की तरह हो रही है। ये शब्द हमें प्रेरणा व चेतावनी दे रहे हैं – बहुत पसारा क्यों करे, कर थोड़े में आस। बहुत पसारा जिन किया, वे ही गए निराश।।

ब्रह्मचारी कृष्ण से स्वामी दीक्षानन्द तक की जीवन यात्रा

स्व. आर्या माता कृष्णा रहेजा
उपप्रधाना, प्रान्तीय आर्य महिला सभा, दिल्ली

एक सामान्य परिवार में आज से १०० वर्ष पूर्व जब एक नन्हें बालक ने पहली किलकारी मारी होगी तो किसी को यह अहसास तक नहीं होगा कि यह नन्हा बालक कल की चिंगारी होगा। आर्यसमाज के भविष्य का रखवाला होगा। पूर्व जन्मों के संकल्पित रूप में मानव–जीवन प्राप्त यह बालक सचमुच में एक मिशन का प्रतीक था और वो मिशन था **वेदमाता** एवं **आर्यसमाज** की सेवा। संकल्पित व्यक्ति मंजिल पा ही लेते हैं और वही हुआ। ब्रह्मचारी कृष्ण आर्यसमाज दीवानहॉल, देहली द्वारा आमंत्रित गोष्ठियों, शास्त्रार्थों, सम्मेलनों में श्रोतारूप में भाग लेने लगा। अंकुर रूप में पड़ी संकल्पशक्ति जागृत हुई और बीस वर्षीय इस नवयुवक की अन्तर्निहित शक्ति को पहचाना शास्त्रार्थ महारथी स्वनामधन्य पं० रामचन्द्र देहलवी ने। उन्होंने भविष्यवाणी की–''**यह युवक आर्यसमाज के लिए उपयोगी सिद्ध होगा और उसके मंच की शोभा बनेगा।**'' उनके इस सम्बोधन ने गुरुदत्त भवन लाहौर में संस्थापित श्रीमद् दयानन्द उपदेशक विद्यालय में प्रवेश का पात्र बनाया।

सर्वप्रथम सरदार मेहरसिंह, मन्त्री, आर्यसमाज वच्छावली के निवेदन पर रविवासरीय सत्संग में सन्ध्या पर प्रथम प्रवचन दिया, जिसकी सराहना न केवल श्रोताओं ने की बल्कि इनके अरबी के गुरु पं. शिवदत्त जी मौलवी फाजिल ने भी की।

ब्रह्मचारी कृष्ण से आचार्य कृष्ण – उपदेशक महाविद्यालय लाहौर से स्नातक होने के बाद उनके मन में ऐसा ही एक विद्यालय स्थापित करने का विचार आया, आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति की सहमति मिली। फिर क्या था, आठ विद्यार्थी लेकर पढ़ाना शुरु कर दिया और परीक्षण के रूप में पं० बुद्धदेव जी, आचार्य विश्वश्रवा जी एवं अमर स्वामी जी ने विद्यार्थियों की परीक्षा ली तो इतने प्रसन्न हुए और कहा कि तुमने दो वर्ष में चमत्कार ही कर दिया, अतः अब तुम गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ चले जाओ, वहाँ गुरुकुल चलाओ। ब्रह्मचारी कृष्ण ने आज्ञा का पालन किया और उनका आचार्य रूप स्थापित हुआ। इस गुरुकुल में भिक्षावृत्ति से लेकर हल चलाने एवं वेद पढ़ाने तक सभी कार्य

१९५६ तक सुचारु रूप से करते हुए तथा गुरुकुल प्रभात आश्रम को आर्थिक एवं शैक्षणिक रूप से समृद्ध करने के पश्चात् एक दिन सहपाठी श्री मनोहरलाल जी, हैदराबाद के साथ ''जंगल में मोर नाचा, किसने देखा, समाज में आओ !'' के आह्वान पर आचार्यत्व छोड़कर उपदेशक व प्रचारक के रूप में आर्यसमाज की सेवा शुरू कर दी।

स्वामी दीक्षानन्द का प्रचारक रूप – १९५६ में गुरुकुल प्रभात आश्रम छोड़ने के बाद श्री मनोहरलाल जी ने इनका परिचय पं. नरेन्द्र जी, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, हैदराबाद से कराया। निजामाबाद आर्यसमाज में इन्हें परखा गया। सोने की पहचान जौहरी ने कर ली और ग्राम–ग्राम, नगर–नगर वेद–प्रचार की दुन्दुभि इनके द्वारा बजती रही। हैदराबाद के आसपास ही नहीं, पं० नरेन्द्रजब तक जीवित रहे आचार्य कृष्ण के अलावा कोई दूसरा उन्हें पसंद ही नहीं आया और सर्वत्र पत्र लिखते कि प्रचार व उपदेश के लिए आचार्य कृष्ण को ही बुलाएं। इस प्रकार आन्ध्र, महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश एवं पंजाब आदि में वेद–प्रचारार्थ भ्रमण किया। समय ने इन्हें इतना प्रसिद्ध कर दिया कि देश ही नहीं विदेशों में भी मॉरीशस, दक्षिणी अफ्रीका, डरबन, नैरोबी, केन्या, पूर्वी अफ्रीका आदि देशों में जाकर वेद–प्रचार की दुन्दुभि बजाई।

स्वामी दीक्षानन्द का लेखक रूप – जनमानस को मन्त्र–मुग्ध करने वाले उपदेशों एवं व्याख्याओं से प्रभावित भक्तों के आग्रह पर स्वामी जी ने सर्वप्रथम ' स्वाध्याय–सर्वस्व' नामक लघु–ग्रन्थ लिखा। इस लघु–ग्रन्थ पर पं० मनोहर विद्यालंकार अमर स्वामी, स्वामी विद्यानन्द विदेह की उत्साहजनक सम्मतियों ने स्वामी को अपने विचारों को कलमबद्ध करने के लिये प्रोत्साहित किया और ''मृत्युंजय सर्वस्व'', ''उपनयन सर्वस्व'', ''अग्निहोत्र सर्वस्व'', ''उपहार सर्वस्व'', ''दो पुटन के बीच'', ''सत्यार्थ कल्पतरु'', ''उद्देश्य सर्वस्व'' आदि अनेक ग्रन्थों का प्रणयन हुआ।

स्वामी दीक्षानन्द का प्रकाशक रूप – प्रवचन और साहित्य प्रचार का मुख्य आधार है, यह सोचकर वैदिक–साहित्य निर्माण में अपने नाम को सार्थक करते हुए स्वयं को दीक्षित कर दिया। उक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपने गुरुवर्य के नाम से समर्पण शोध संस्थान की स्थापना की।

प्रकाशन की उत्कृष्टता को देखकर अमर शहीद आर्यश्रेष्ठ महाशय राजपाल के सुपुत्र, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली के अधिपति, डीएवी कॉलेज, प्रबन्धकर्तृ समिति के उपप्रधान श्रद्धेय विश्वनाथ जी ने कहा कि जो कार्य अकेले स्वामी जी कर रहे हैं वैसा तो बड़ी संस्थाएं एवं सभाएं, जिनके पास साधनों की कोई कमी नहीं है, वे भी नहीं कर रहे हैं। मौलिक साहित्य की रचना और प्रकाशन ही नहीं, अपित अप्राप्य और लुप्त वैदिक धर्म के मानक ग्रन्थों का पुनरुद्धार उनके पुनःप्रकाशन द्वारा किया जाने वाला आपका प्रयास सर्वथा प्रशंसनीय है... इसके लिए आर्य जगत् आपके प्रति सदैव ऋणी रहेगा। श्री वीरेन्द्र एवं स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने भी कुछ इसी प्रकार की टिप्पणियाँ की हैं।

वैदिक सिद्धान्त प्रतिपादक ग्रन्थों का विधिवत् प्रकाशन–समर्पण शोध संस्थान में १९८३ से वैदिक सिद्धान्त प्रतिपादक ग्रन्थों का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। वेदमंजरी, ऋग्वेद, मण्डल मणि–सूत्र, वैदिक विनय, शतपथ ब्राह्मण का भाष्य, पुरुष सूक्त का विवेचनात्मक अध्ययन, सामवेद संस्कृत भाष्य, (राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित) इत्यादि ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ।

स्वामी जी ने एक अन्य प्रकाशन संस्थान 'कुसुमलता आर्य प्रतिष्ठान' के नाम से स्थापित कर दी। इसके अन्तर्गत स्वाध्याय संहिता, अग्नि देवता एवं इन्द्र देवता का अध्ययन, Anthology of Vedic Hymns, Glimpses of Swami Dayanand, Works of Pt. Gurudatta Vidyarthi, Veda The Right Approach इत्यादि ग्रन्थ प्रकाशित हुए। समर्पण शोध संस्थान से ५० एवं कुसुमलता आर्य प्रतिष्ठान से १५ ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। सत्यं शिवं सुन्दरम् स्वामी जी की प्रकृति थी और उनके सभी कार्यों में इसके दर्शन होते थे। प्रकाशन के क्षेत्र में यह एक नयी दिशा का सूत्रपात था।

स्वामी दीक्षानन्द का संस्थापक रूप – विद्यार्थी काल से ही स्वामी जी संस्था स्थापित करने में रुचि रखते थे। अतः भटिण्डा में उपदेशक विद्यालय की स्थापना कर डाली। पुनः स्वामी समर्पणानन्द जी के आदेश से गुरुकुल प्रभात आश्रम को इस प्रकार चलाया, जैसा कि संस्थापक ही हों। प्रभात आश्रम के धनुर्विद् देश का सम्मान बढ़ा रहे हैं। समर्पण शोध संस्थान साहिबाबाद वैदिक साहित्य के प्रकाशन का विशिष्ट केन्द्र है। कुसुमलता आर्य प्रतिष्ठान भी आर्य साहित्य के प्रकाशन का केन्द्र बन गया है।

अपनी परम्परा का एकमात्र व्याख्याकार – आर्य जगत् इस बात से इन्कार नहीं कर सकता कि स्वामी दीक्षानन्द अपने ढंग से, कुछ निराले या पूर्णतः नये ढंग से सोचते, टीका करते थे, व्याख्या करते थे। कई बार तो वे व्याख्यायें वाद–विवाद का विषय भी बन जाती थीं, उनकी आलोचना भी होती थी, क्योंकि वे व्याख्याएं लीक से हटकर होती थीं। हों भी क्यों नहीं, स्वामी जी ऋषि थे, कवि थे, मनीषी थे और क्रान्तदर्शी भी। अतः अपनी ऊहा से आर्य जगत् को नित नया देने में लगे रहे। शायद स्वामी जी की इसी बात को देखकर आर्य समाज, सान्ताक्रूज, मुम्बई में हुए सात दिन के प्रवचनों को नियमित रूप से सुनने के बाद स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज को कहना पड़ा–''दीक्षानन्द अपनी परम्परा के अन्तिम व्याख्याता है। मुझे लगता है ऐसा कोई पैदा हो जाए तो दूसरी बात है।'' शायद इसीलिये गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने स्वामी जी को विद्यामार्तण्ड की मानद उपाधि से सम्मानित किया।

मैं उस महान् मनीषी के प्रति श्रद्धावनत् होकर आर्यजगत के बुजुर्ग एवं युवा साथियों से निवेदन करती हूँ कि आज हम सबकुछ भूलकर स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी द्वारा दर्शाये गये मार्ग का अनुकरण करें।

सुभाषितामृतम्

संकलयित्री
श्रीमती निर्मल नवीन रहेजा

१. **प्रभवन्त्यभिमानशालिनाम् मदमुत्तम्भायतुं विभूतयः। (किरातार्जुनीयम - २-४८)**
अर्थ – घमण्डी की सम्पत्ति घमण्ड को बढ़ाती है।

२. **शास्त्रं हि निश्चिततधियां क्व न सिद्धिमेति। (शिशुपालवध - ५-४७)**
अर्थ – निश्चित बुद्धिवालों का शास्त्र सर्वत्र सफल होता है।

३. **कमिवेशते रमयितुं गुणाः (किरात - ६-२४)**
अर्थ – गुण किसको प्रसन्न नहीं कर देते।

४. **उच्छायं नयति तहच्छयापि योगः। (किरात - ७-२७)**
अर्थ – महान् पुरुषों का मिलना उन्नतिकारक होता है।

५. **सुज्ञं प्रति-ईंगित विभावनमेव चाचः। (नैषध-११-१०१)**
अर्थ – समझदार के लिए संकेत ही वचन है।

६. **परिजनतापि गुणाय सद्‌गुणनाम्। (किरात -१०-६)**
अर्थ – सज्जनों का सेवक बनना भी गुणकारक होता है।

७. **दाक्ष्यं हि सघफलदम् (शिशपाल-१२-३२)**
अर्थ – चातुर्य तत्काल फलप्रद होता है।

८. **हरति मन्त्रों मधुरा हि यौवन श्रीः। (किरात -१०-१३)**
अर्थ – मधुर यौवन की शोभा मन को हर लेती है।

९. **प्रियमनु सुकृतां हि स्वस्पृहाषा विलम्ब। (नैबध - ३-१३४)**
अर्थ – पुण्यजनों की अभीष्ट वस्तु के लिए मात्र इच्छा देरी होती है।

१०. **मद मूढ़बुद्धिषु विवेकता कुतः। (शिशु - १३-६)**
अर्थ – मद से मूढ़ बुद्धि वालों में विचार नहीं होता।

११. **वदति हि संवृतिरेव कामितानि। (किरात -१०-४४)**
अर्थ – छिपाना ही अनुराग को प्रकट करता है।

१२. **सुलभा रम्यते लोके दुर्लभाहिगुणार्जनम। (किरात -११-११)**
अर्थ – संसार में सौन्दर्य सुलभ है किन्तु गुणार्जन दुर्लभ है।

१३. **कामाः कष्टा हिशत्रवः। (किरात -११-१५)**
अर्थ – कामना ही कष्टदायक शत्रु है।

१४. **क्रियते धवल खलुच्चकैर्धवलैरचः। (शिशु - १६-४६)**
अर्थ – प्रकाश तो प्रकाश को ही अधिक चमकाता है।

आईपीएल मैच

दिनांक ३ मई २०१४ को कठपुतली कॉलोनी ट्रांजिट कैम्प, आनन्द पर्वत स्थित संस्थान की पाठशाला में पढ़ने वाले बच्चों को संस्थान की तरफ से दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में हो रहे आईपीएल–२०१४ के दिल्ली डेयरडेविल्स और राजस्थान रॉयल्स के बीच हुए मैच दिखाया गया। इस मैच को देखने के लिए हम सभी बच्चे बहुत ही उत्साहित थे। मैच में जाने से पहले हम सभी बच्चों को संस्थान द्वारा quicker.com की तरफ से दिल्ली डेयरडेविल्स टीम की टी–शर्ट भी पहनने के लिए दी गई। यह टी–२० क्रिकेट मैच रात ८ बजे से शुरु हुआ था। मैच के दौरान सभी बच्चे पहली बार स्टेडियम देखकर बहुत खुश नजर आ रहे थे। आज से पहले हम लोगों ने मैच सिर्फ टीवी पर ही देखे थे। मैच के दौरान संस्थान की तरफ से बच्चों के लिए खाने–पीने का भी इन्तजाम किया गया था। हालांकि इस मैच में दिल्ली डेयरडेविल्स की टीम हार गई, पर फिर भी हम सभी ने इस मैच का भरपूर आनन्द लिया।

शुभांगी, मराठी समाज,
कठपुतली कॉलोनी ट्रांजिट कैम्प, आनन्द पर्वत

केएमजीएस विद्यालय की ८वीं कक्षा की प्रतिभा समन्विता छात्रा - करिश्मा

यह छात्रा उत्तरांचल की मूल निवासिनी है और अपने माता–पिता के साथ गली नं. १३ के मकान नं. १६ में संगम विहार, दक्षिणी दिल्ली में रहती है। आर्थिक दृष्टि से परिवार जैसे–तैसे गुजारा करता है। माता प्रायः बीमार रहती है और पिता किसी कम्पनी में गार्ड का काम करता है। ये तीन बहनें हैं, बड़ी विवाहित है। दोनों छोटी बहनें हमारे केएमजीएस संस्थान में पढ़ती हैं। करिश्मा के दो भाई हैं। इस तरह परिवार में छः सदस्य हैं, विवाहित लड़की भी कभी–कभी आ जाती है। यह छात्रा अतीव प्रतिभा समत्विता है यह पढ़ने में पूर्णतः रुचि रखती है और याद भी कर लेती है। यहाँ तक यज्ञ के सभी प्रार्थना मन्त्र भी याद है तथा यज्ञ के अनेक मन्त्र और यज्ञ की प्रार्थना भी पूर्णतः स्मरण है। मैं यहाँ पर यही कहूँगा कि इस छात्रा को यदि अच्छी शिक्षा–दीक्षा मिले तो यह अपना नाम करेगी। माता–पिता व गुरू और स्कूल का भी नाम इससे होता है। मेरी हार्दिक शुभकामना इसके साथ है। यह करिश्माई छात्रा करिश्मा देश में अपना नाम करे। इत्यलम्

आचार्य महावीर शास्त्री
प्रधानाचार्य

आर्य समाज सैनिक फार्म्स धर्मार्थ समिति (पंजीकृत)

पंजीकरण संख्या – 429/दक्षिण जिला/2011

कृष्णा महेश गायत्री संस्थान (पंजीकृत)

पंजीकरण संख्या – 5040/दिनांक 30-11-2007

आर्य समाज की स्थापना 31 मार्च 2011 में श्रीमती निर्मल नवीन रहेजा जी के सद्प्रयत्नों से हुई।

आर्य समाज के पदाधिकारी

1. प्रधान – श्री नवीन एम. रहेजा
2. कोषाध्यक्ष – श्रीमती इन्दू कौल
3. महामन्त्री – श्री महावीर सिंह शास्त्री

हमारे इस संस्थान को F&27MOS/SSS/OBE/MOU- 2709113& 2013&889, जो भारत सरकार के अन्तर्गत एक स्वायत संगठन है, से मान्यता मिल गई है। जिसमें विभिन्न कक्षाओं में विभिन्न आयु वर्ग के छात्र पढ़ते है। स्कूल में खेल व सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होते हैं जिनमें भाग लेना सभी छात्रों के लिए अनिवार्य है। सभी बच्चों को शिक्षा, यज्ञ, योग आदि की निःशुल्क शिक्षा मिलती है। पुस्तकें, वर्दी तथा भोजन की निःशुल्क व्यवस्था है। सर्दियों में कम्बल भी वितरित किये जाते हैं। लगभग एक सौ छात्र–छात्राएं नित्य ही समय पर स्कूल आते हैं, हवन–प्रार्थना के बाद नित्य ही वैदिक प्रवचन दिया जाता है।

आचार्य महावीर शास्त्री
प्रधानाचार्य

केस स्टडी

केन्द्र – रहेजा नवोदया
नाम – सीमा देवी
गाँव – गुलड़िया (यूपी)
जिला – शाहाजपुर

मेरा नाम सीमा देवी है। मेरे दो बच्चे है, जिनके नाम आशीष और आदर्श है। मैं उत्तर प्रदेश की रहने वाली हूँ। मेरी चिन्ता की वजह यह थी कि मैं पहली बार काम करने के लिए अपने गाँव से बाहर परदेश जा रही हूँ। मैं सोच रही थी कि जब मैं बाहर काम करने जाऊँगी तो मेरे बच्चों का ध्यान कौन रखेगा? कौन उन्हें समय पर खाना देगा? कौन उनकी साफ–सफाई का ध्यान रखेगा ? बस यही सब चिन्ता मुझे खाये जा रही थी।

जब हम काम के लिए रहेजा कम्पनी के नवोदया प्रोजेक्ट साइट पर आये तो कृष्णा महेश गायत्री संस्थान के द्वारा संचालित पाठशाला में दूसरे मजदूरों के बच्चों को पढ़ता व खेलता देखकर मेरी सारी चिन्ता दूर हो गई। मुझे पाठशाला का माहौल बहुत ही अच्छा लगा। जब पाठशाला की दीदीजी ने मुझे समझाते हुए कहा कि जब तुम काम पर जाओगी तो अपने बच्चों को पाठशाला में छोड़कर चली जाना, उनका ख्याल हम रखेंगे। यहाँ तुम्हारे बच्चों को सभी सुविधाएं मिलेगी और वह दूसरे बच्चों के साथ खुश रहेंगे। फिर हम अपने बच्चों को पाठशाला में छोड़कर निश्चिंत होकर काम पर जाने लगे।

अब मेरे दोनों बच्चे रोज स्कूल जाते हैं। यहाँ पर दीदीजी सभी बच्चों को माँ से भी ज्यादा प्यार से रखती है। जब मेरे बच्चे गाँव से यहाँ शहर में आये थे तो उन्हें कुछ भी लिखना–पढ़ना नहीं आता था। यहाँ संस्थान के स्कूल में आकर उन्हें लिखना, गिनती, छोटी–छोटी बाल–कविताएँ, ड्राइंग करना आ गया है। इसके अलावा अपनों से बड़ों का आदर–सम्मान करना तथा और भी बहुत सी अच्छी बातें वे यहाँ सीख रहे हैं। अपने बच्चों में आए इस बदलाव से मैं बहुत ही खुश हूँ। स्कूल में प्रत्येक महीने सभी बच्चों की माताओं की एक मासिक सभा भी होती है जिसमें हमें बच्चों की परवरिश के बारे में भी समझाया जाता है।

यहाँ पर मेरे बच्चों का टीकाकरण, समय–समय पर वजन तोलना, साफ–सफाई, आहार, शिक्षा व सुरक्षा का विशेष ध्यान रखा जाता है। यहाँ पर मेरे बच्चों का सम्पूर्ण विकास हो रहा है और मै। इससे बहुत खुश हो।

धन्यवाद
सीमा देवी

बच्चों का पन्ना

मेरी पहली रेल यात्रा

नवीन कक्षा-तृतीय

मैंने पहली बार रेल म्यूजियम देखा, मुझे वहाँ हमारे रेल इतिहास के बारे में पता चला। मुझे यह भी पता चला कि रेल कितनी तरह की होती है और पहले किस तरह से चलती थी और आज के समय उसमें कितना विकास हुआ है। रेल म्यूजियम की स्थापना का भी मुख्य उद्देश्य भी शायद यही था कि हम अपने इतिहास से अनजान न रहे, हमें ये पता रहे कि हमने कितनी तरक्की की है और कितनी करनी है। दुनिया में कितनी तरह के पुल है। हमने वहाँ पर पमबन पुल का मॉडल भी देखा जो कि नदी के ऊपर इस तरह बनाया गया है कि जब कोई बोट या जहाज आता है तो वह पुल खुल जाता है और और उनके जाने के बाद बन्द हो जाता है। बनाने वालों ने इसे कितना सोचकर बनाया होगा क हर तरह का सड़क व रेल यातायात सुगमता से आ–जा सके। हमने वहाँ पर टॉय ट्रेन की भी यात्रा की। जिसमें हम सबको बहुत आनन्द आया। उस ट्रेन के इंजन की आवाज और पत्थरों के टकराने की आवाज एक अलग ही दुनिया में ले जाने का अहसास दे रही थी। ऐसा लग रहा था कि जैसे हम सच में ट्रेन में अपने दोस्तों के साथ यात्रा कर रहे हैं और कहीं जा रहे हैं। रेल म्यूजियम में जहाँ ट्रेन चल रही थी, वहाँ का माहौल बिल्कुल रेल जंक्शन की ही तरह था जो उसे और भी वास्तविकता के करीब ले जा रही थी। मेरा यह अनुभव मुझे हमेशा याद रहेगा, जोकि मुझे रेल इतिहास और मेरे मित्रों के और करीब ले आया।

आर्य माँ कृष्णा रहेजा जी

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक नवीन एम रहेजा द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–110005 से मुद्रित व डब्ल्यू 22 ए–2, वेस्टर्न एवेन्यू, सैनिक फार्म, नई दिल्ली–110062 से प्रकाशित।
(RNI No. DELHIN/2010/31333)